अध्याय तिसरा

संशोधन समस्या से संबंधित साहित्य का समालोचन।

३.१ प्रस्तावना।

३.२ संशोधन समस्या से संबंधित संशोधित साहित्य का समालोचन।

३.२.१ अंग्रेजी पाठयपुस्तक निर्मिती, मूल्याकंन, दर्जा और गुणदोष इस क्षेत्र में हुआ संशोधन।

३.२.२ हिंदी पाठयपुस्तक की आवश्यकताएँ, विषयांश इन क्षेत्रों में हुआ संशोधन।

३.२.३ इतिहास पाठयपुस्तक का पाठयचर्या, आशय, अभ्यास, मूल्यों के प्रति संवेदना इस क्षेत्र में हुआ संशोधन।

३.२.४ भूगोल पाठयपुस्तक का मूल्यांकन, ढाँचा, संरचना, आशय योग्यता, अध्यापन इस क्षेत्र में हुआ संशोधन।

३.२.५ गणित पाठयपुस्तक की कमियाँ, संकल्पना, मूल्यांकन इस क्षेत्र में हुआ संशोधन।

३.२.६ विज्ञान पाठयपुस्तक का आशय विश्लेषण, मूल्यांकन इस क्षेत्र में हुआ संशोधन।

३.२.७ पाठयपुस्तकों के बारे में अन्य संशोधन।

३.३ उपसंहार।

अध्याय तिसरा

संशोधन समस्या से संबंधित साहित्य का समालोचन।

३.१ प्रस्तावना -

प्रस्तुत संशोधन समस्या से संबंधित साहित्य का समालोचन करना महत्वपूर्ण है। इसी कारण शोधार्थी को तुलनात्मक जानकारी, उचित संशोधन पध्दति और संशोधन का तंत्र इन के बारे में निश्चित कल्पना प्राप्त होती है।

इस के संबंध में व्हीटने अपने 'The Elements or Research' इस ग्रंथ में कहते है-

> "The student should find, analyse and evaluate critically every pertinent research report dealing with his chosen problem. Anything less than this will be neither sensible nor scientific."
>
> "The review of the literature promotes a greater understanding of the problem and its crucial aspects and ensures the avoidance of unnecessary duplication. It also provides comparative data on the basis of which to evaluate and interprete the significance of one's finding. In addition, it contributes to the scholarship of the investigator. No experienced researcher would think of undertaking a study without acquainting himself with the contribution of previous investigator."

संशोधित साहित्य के समालोचन के उद्देश्य निम्नलिखित है -

- चुने हुए विषय के संबंध में पुरे हुए संशोधन की कल्पना प्राप्त करके उनकी पुनरावृत्ती टालना और योग्य संशोधन विषय चुनने के लिए मार्गदर्शन प्राप्त करना।
- चुने हुए विषय से संबंधित आवश्यक उचित पध्दति, तंत्र इनके संबंध में जानकारी प्राप्त करना।
- संशोधन विषय से संबंधित सिध्दांत और संकल्पित कार्यो की रचना के संबंध में अचूक कल्पना की प्राप्ति करना।
- आधार सामग्री और निष्कर्ष के संबंध में तुलनात्मक जानकारी प्राप्त करना, समुचित सांख्यिक तंत्र और उनका उपयोग एवं निर्वचन करने के लिए मार्गदर्शन प्राप्त करना।
- संदर्भ साहित्य का अध्ययन करके अपनी ज्ञानसामग्री बढ़ाना।

३.२ संशोधित समस्या से संबंधित साहित्य का समालोचन -

प्रस्तुत विषय से संबंधित संशोधित अध्ययन का शोध लेने के लिए शोधार्थी ने निम्नलिखित ग्रंथों का अवलोकन किया।

१. दि थर्ड इंडियन इयर बुक ऑफ एज्युकेशनल रिसर्च एन.सी.इ.आर.टी., नई दिल्ली।

२. दि सर्वे ऑफ रिसर्च इन एज्युकेशन, दि एम.एस. युनिव्हरसिटी, बडोदा।

३. एज्युकेशन इनव्हेस्टीगेशन इन इंडियन युनिव्हरसिटीज (१९३९-१९६१) एन.सी.आर.टी., नई दिल्ली।

४. एज्युकेशन इनव्हेस्टीगेशन इन युनिव्हरसिटीज इन महाराष्ट्र (१९३९-१९७०) स्टेट इन्स्टिटयूट ऑफ एज्युकेशन, पुणे - ३०

५. दि सेकंड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एज्युकेशन (१८७२-१९७८) संपादक डॉ.एम.बी. बुच, सोसायटी फॉर एज्युकेशनल रिसर्च ॲण्ड डेव्हलपमेंट, बडौदा।

६. एज्युकेशनल रिसर्च इन दि युनिव्हरसिटी ऑफ बॉम्बे, संपादिका डॉ. प्रतिभा देव, डिपार्टमेंट ऑफ एज्युकेशन युनिव्हरसिटी ऑफ बॉम्बे, १९८१

७. एज्युकेशनल रिसर्च इन युनिव्हरसिटीज इन महाराष्ट्र, प्लॅटीनम ज्यूबली इयर व्हाल्युम, संपादक डॉ. एन. के. पाटोळे, एस.टी. कॉलेज, बॉम्बे, १९८३

८. दि थर्ड सर्व्हे ऑफ रिसर्च इन एज्यूकेशन (१९७८-१९८२), संपादक डॉ. एम.बी. बूच, नॅशनल कौन्सील ऑफ एज्यूकेशनल रिसर्च ॲण्ड ट्रेनिंग, न्यू दिल्ली।

९. दि फोर्थ सर्व्हे ऑफ रिसर्च इन एज्यूकेशन (१८८३-१९८८) व्हाल्यूम १ और २, संपादक, डॉ. एम.बी. बूच, एन.सी.इ.आर.टी., न्यू दिल्ली।

उपर्युक्त ग्रंथों का यत्नपूर्वक अवलोकन करके प्रस्तुत संशोधन से संबंधित जो संशोधन किया है आगे चलकर उस की समिक्षा की है।

३.२.१ अंग्रेजी पाठयपुस्तक निर्माण, मूल्यांकन स्तर और गुणदोष इस क्षेत्र में हुआ संशोधन -

- रस्तोगी के.जी. ने (१९७५) मातृभाषा के क्रमिक पुस्तक की निर्मिती और मूल्यांकन का अध्ययन किया। इस अध्ययन के उददेश निम्नलिखित है -

मातृभाषा के क्रमिक पुस्तकों के निर्माण और मूल्यांकन के तत्व, दृष्टिकोण, निष्कर्ष विकसित करना। इस संशोधन के लिए निम्नलिखित साधनों का उपयोग किया गया। अनुक्रम विश्लेषण के लिए विश्लेषण पत्र, अध्यापकों के लिए प्रश्नावली, छात्रों के लिए प्रश्नावली, विवरन पत्र आदि का उपयोग किया। प्रस्तुत संशोधन से ऐसा प्रतित हुआ की मातृभाषा के क्रमिक

पुस्तकों के निर्माण के लिए निश्चित तत्वों का होना जरुरी है। क्रमिक पुस्तकों के मूल्यांकन के लिए साधन एवं तंत्रों का होना जरुरी है।

- नायर के. एस. जी ने (१९७६) केरल राज्य के १९५२ से निर्मित क्रमिक पुस्तकों का विश्लेषण करके अंग्रेजी पाठयपुस्तक के स्तर का अध्ययन किया। इस अध्ययन के उद्देश्य निम्नांकित थे -

अंग्रेजी क्रमिक पुस्तकों का विश्लेषण करना, अंग्रेजी पाठयपुस्तकों के स्तर का शोध लेना, उक्त शोध के निष्कर्ष इस प्रकार है -

अंग्रेजी पाठयपुस्तकों का स्तर कक्षा के अनुसार बदलता है, पहले भारतीय अंग्रेजी लेखकों का नेतृत्व कम था। पुराने किताबों में शब्दों का बोज जादा था। आगे चलकर वह कम हो गया। शब्दों की कठिनता का आलेख क्रम बढ़ता हुआ था। गठन में सुधार हुआ था। शब्दसमूह, क्रियापद व वाक्य प्रचारों का उपयोग कक्षा के अनुसार बढते हुए क्रम का था।

- सिंग एम.ए. जी ने (१९८४) हरियाना के छटी और दसवीं कक्षा के लिए नियुक्त राष्ट्रीय क्रमिक पुस्तकों के गुण-दोषों का विश्लेषण किया। उन्होने यह विश्लेषण व समीक्षात्मक मूल्यांकन भौतिक अंग से किया। इस के लिए उन्होने प्रश्नावली साधन का उपयोग किया। शोध के निष्कर्ष निम्नांकित हैं -

१. छटी कक्षा के अँग्रेजी पुस्तक में विवेचन और चित्रों की संख्या कम थी।

२. नौंवी कक्षा के किताब में उदाहरणों के साथ स्पष्टीकरण तथा चित्रों की संख्या कम थी। साथ-साथ भाषा भी जटिल थी और शब्दों का टंकन गलत था।

३. अंग्रेजी क्रमिक पुस्तक के गद्य पाठ कम विनोदी होते हुए अध्ययन कर्ता की दृष्टि से कुछ पाठ जटिल थे। कविताएँ जटिल और लंबी थी।

३.२.२. हिंदी पाठयपुस्तक की आवश्यकता, मूल्य, विषयांश इस क्षेत्र का संशोधन -

- चौधरी यू.एस. जी ने (१९७६) राष्ट्रीय हिन्दी क्रमिक पुस्तकों में मूल्य, आवश्यकता, विषयांश इस दृष्टि से मूल्यांकन किया। आपको प्रस्तुत संशोधन से ऐसा प्रतित हुआ कि क्रमिक पुस्तक की संरचना निम्न दर्जे की है।

३.२.३ इतिहास पाठयपुस्तक का अभ्यास मूल्य प्रतिती अभ्यासक्रम और आशय इस क्षेत्र में हुआ संशोधन -

- करीम पी.आय.ए. आपने १९६८ में केरल राज के शालाओं में निर्धारित इतिहास पाठयपुस्तक के आशय का 'राष्ट्रीय एकात्मता और साहित्य के दृष्टि से पृथःकरण' इस नामक शीर्षक शोध प्रबंध पूरा किया है। इसमें आपको निम्नांकित निष्कर्ष मील चुके है -

१. प्रस्तुत पाठयपुस्तक में जातीवाद और धर्मवार कम करने के लिए उदाहरणों की मात्रा कम दिखाई देती है।

२. पाठयपुस्तक का आशय राष्ट्रीय एकात्मता बढ़ाने के लिए कोई खास प्रयास नहीं करता है।

- वाघमारे एस.जी. जी ने (१९७१) चौथी कक्षा के इतिहास पुस्तक में नियुक्त अभ्यास का अध्ययन किया। इन्हें प्रस्तुत संशोधन से ऐसा प्रतित हुआ कि पाठयपुस्तक में २२ प्रतिशत प्रश्न उचित है।

- खेर एस.व्ही. जी ने (१९७२) क्या आठवीं कक्षा के इतिहास पुस्तक मूल्यों की प्रतिति विकसित करने के लिए उपयुक्त है? इस का शोध लेने के लिए समिक्षात्मक मूल्यांकन किया। इस अध्ययन के उददेश निम्नलिखित है -

१. क्या नियम अभ्यासक्रम में उल्लेखित उद्देश्य साध्य करने के लिए पाठयपुस्तक काफी है? इसका शोध लेना।

२. छात्रों की आकलन शक्ति के लिए पाठयपुस्तक की योग्यता जाँचना।

३. छात्र जीवन से संबंधित पाठों की सुसंबंधता है या नहीं इसका शोध लेना। इस संशोधन के लिए उन्होंने सर्वेक्षण संशोधन पध्दति और प्रश्नावली इन साधनों क उपयोग किया।

उपर्युक्त संशोधन के निष्कर्ष निम्नलिखित है -

१. पाठयपुस्तक में सभी घटक उचित पध्दति से दिखाये गये है।

२. पाठयपुस्तक आकर्षक एवं संपन्न है।

३. पाठयपुस्तकों के चित्र आकृति एवं नक्शे काफी है।

४. पाठयपुस्तक में अनेकविध अभ्यास प्रश्नों की जरुरी है।

- घोरी आय. जी ने (१९८०) पश्चिम बंगाल के इंटर शिक्षा की 'नवीन अभ्यासक्रम का इतिहास' का अध्ययन पाठयक्रम को प्रमाण मानकर किया। इस अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य नये इंटर अभ्यासक्रम के गुणों के बारे में अध्यापक और छात्रों की दृष्टि परखना था। अध्ययन के निष्कर्ष इस प्रकार के थे कि इंटर श्रेणी के अभ्यासक्रम का आशय बिलकुल जटिल और असंतुलित था।

- करीम पी.आय.ए. जी ने (१९८२) केरल के इतिहास क्रमिक पुस्तक के आशय का राष्ट्रीय एकात्मता के लिए प्रतिक और साहित्य विकसित करने की दृष्टि से विश्लेषण किया।

३.२.४ **भूगोल पाठयपुस्तक का मूल्यांकन, ढाँचा, संरचना, आशय-योग्यता, अध्यापन इस क्षेत्र का अनुसंधान** -

- पोंक्षे डी.बी. जी ने (१९७२) छटीं कक्षा के भूगोल पाठयपुस्तक का मूल्यांकन किया। उन्हें ऐसा प्रतित हुआ की भूगोल पाठयपुस्तक छात्रों के लिए अयोग्य है। उन्होने पाठ छोटे और रंगीन नक्शे की भरती करने की सूचना की।

- पटट्भिराम जी ने (१९७३) कक्षा आठवी, दसवी के राष्ट्रीय कृत क्रमिक पुस्तकों का ढाँचा और संरचना का मूल्यांकन किया। उनके अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य आशय की संरचना और ढाँचे का आलोचनात्मक अध्ययन तथा छात्रों ने प्राप्त करने का उद्देश्य था। उनके अध्ययन के निष्कर्ष निम्नांकित है।

१. सभी राष्ट्रीयकृत क्रमिक पुस्तकों की गठन संबंधी विशेषताएँ संतोष पूर्ण रही है।

२. साधारणतया पुस्तकों में काफी आशय था किंतु कुछ घटकों में परिवर्तन करने की आवश्यकता थी।

३. क्रमिक पुस्तक की संरचना अयोग्य थी।

- खान ए. ए. जी ने (१९८५) बांगला देश की इंटर शिक्षा स्तर के भूगोल अध्यापन का अध्ययन किया। इस अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित थे।

१. भूगोल अध्यापन के उद्देश्यों का अध्ययन करना।

२. भूगोल पाठयक्रम और क्रमिक पुस्तकों के आशय की योग्यता का परीक्षण करना।

३. भूगोल अध्ययन पध्दति और प्रक्रिया का सर्वेक्षण करके मूल्यांकन करना।

इस शोध कार्य के लिए समस्या सूची विचार सूची (मतावली), प्रश्नावली और साक्षात्कार इन साधनों का उपयोग किया। उनके अध्ययन के निष्कर्ष इस प्रकार है -

पाठयपुस्तकों का आशय और पाठयक्रम उददेश्य साध्य करने के लिए काफी नहीं है।

३.२.५ गणित पाठयपुस्तकों की त्रुटियाँ, संकल्पना और मूल्यांकन इस क्षेत्र का अनुसंधान-

- वालावलकर वाय. एन. जी ने (१९७१) दुसरी से चौथी के गणित पाठयपुस्तक की त्रुटियों खोजने के लिए अध्ययन किया। उन्हें ऐसा प्रतित हुआ कि क्रमिक पुस्तक दैनिक जीवन के लिए उचित है और सभी अभ्यास के लिए उत्तर सूची के पूर्ति के संबंध में सूचना की।

- करंदीकर एस.पी. जी ने (१९७३) कक्षा दुसरी और सातवीं की गणित क्रमिक पुस्तकों की संकल्पनाओं का विश्लेषण किया। उन्हें आकृति और चित्रों की त्रुटियाँ दिखाई दी। पुस्तक की संरचना तर्कपूर्ण थी किंतु मानसशास्त्रीय नहीं थी।

- गोपालकृष्णन के. आर. जी ने (१९७७) जी ने पाँचवी से सातवीं तक के गणित पाठय पुस्तकों का मूल्यांकन किया। उन्हें ऐसा प्रतित हुआ कि पाठयपुस्तकों की संरचना उचित और सुयोग्य है।

- ललित्तम्मा के.एन. जी ने (१९७७) पाँचवी से सातवीं तक के गणित पाठय पुस्तकों का मूल्यांकन किया। इस अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य -

१. गणित के आदर्श क्रमिक पुस्तक निर्माण की कसौटी विकसित करना और इस विकसित कसौटी पर आधारित विश्लेषण पत्र तैयार करना।

शोधार्थी ने विश्लेषण पत्र की मदद से छः क्रमिक पुस्तकों का मूल्यांकन किया। इसके लिए प्रश्नावली इस संशोधन साधन का उपयोग किया गया। इस अध्ययन के निष्कर्ष इस प्रकार है -

१. जीवन की परिस्थिति से उत्पन्न कल्पनाओं की संरचना काफी नहीं थी।

२. सभी कक्षाओं के साधनों की संपन्नता बढ़ाने की जरुरत थी।

३. पाठयपुस्तक में मूलभूत तत्वों पर बल नहीं दिया था।

४. भौतिक दृष्टिकोण का पाठयपुस्तक में समर्थन किया था।

३.२.६ विज्ञान पाठयपुस्तक का आशय - विश्लेषण और मूल्यांकन क्षेत्र का अनुसंधान-

- जोशी एम.जी. जी ने (१९७२) पाँचवी कक्षा के विज्ञान पाठयपुस्तक का आशय विश्लेषण किया। और स्पष्टीकरण, विवेचन, भाषा, शब्दसंपत्ती की उचित अनुचितता की जाँच की। कुछ व्याकरणीक त्रुटियाँ उन्हें दिखाई दी। उसी प्रकार पाठयपुस्तक में रंगीन चित्रों की आवश्यकता को सूचित किया।

- एस.आय.ई. जी ने (ओरिसा १९७५) मूल्यांकन पत्र का विकास और ओरिसा स्कूल में एन.सी.ई.आर.टी. ने तीसरी कक्षा के निर्मित प्रायोगिक क्रमिक पुस्तक का मूल्यांकन किया। उन्होने प्रश्नावली इस संशोधन साधन का उपयोग किया। इस अध्ययन के निष्कर्ष निम्नलिखित है-

१. बहिरंग के सिवा बाकी सभी बातें पाठयपुस्तक में अच्छी है।

२. पाठयपुस्तक के पाठों के क्रम में बदल करना जरुरी है।

३. पाठयपुस्तक के जादा विवेचन के लिए जादा तासिकाएँ आवश्यक है।

४. पाठयपुस्तकों में चित्रों की उपयुक्तता है।

३.२.७ पाठयपुस्तक से संबंधित अन्य संशोधन -

- एम.एस. बी.टी.पी.सी.आर. जी ने (१९७४) राज्यों की क्रमिक पुस्तकों की उपयुक्तता का सर्वेक्षण किया। इस सर्वेक्षण का हेतू क्रमिकों की उपयुक्तता का ग्रामीण और शहरी छात्रों का अंतर जाँचना था। प्रस्तुत सर्वेक्षण मराठी माध्यम के पहली कक्षा से सातवीं के लिए उपयोगी क्रमिक पुस्तकों के दरम्यान सीमित था। सांख्यिकी जानकारी इकठ्ठा करने के लिए जानकारी सूची

का साधन के रुप में उपयोग किया। उनका प्रमुख निष्कर्ष इस प्रकार था कि छात्रों की तुलना में पाँच प्रतिशत छात्राएँ बिना पुस्तक की दिखाई दी।

- रॉय एस.सी. जी ने (१९७५) बंगाली क्रमिक पुस्तकों का परीक्षण किया। अपने संशोधन में उन्होने बंगाली व्याकरण और क्रमिक पुस्तकों की संरचना का तुलनात्मक अध्ययन किया।

- चौधरी आय.एस. (१९७७) जी ने क्रमिक पुस्तक सुधार की समस्या और अदृश्य अनुचित प्रयोगों को प्रदर्शित किया। उन्होने भारतीय क्रमिक पुस्तकों के सुधार कार्यक्रम का समीक्षात्मक मूल्यांकन किया। उनके अध्ययन के उद्देश्य -

१. क्रमिक पुस्तक सुधार का स्वरुप मूल्यांकन करना।

२. क्रमिक पुस्तक सुधार की समस्या और अदृश्य अनुचित प्रयोग प्रदर्शित करना।

३. वर्तमान परिस्थिति के क्रमिक पुस्तकों के सुधार कार्यक्रम का मूल्य निर्धारित करना।

आपके इस अध्ययन के निष्कर्ष ऐसे थे कि सभी राष्ट्रीयकृत क्रमिक किताबें नियुक्त किये गये अभ्यासक्रम के अनुसार थी। गणित पुस्तक के कुछ उत्तर भूगोल के नक्शे, विज्ञान के तथ्य गलत थे। कुछ पुस्तकों में विवेचन उँचे स्तर का था किंतु गणित की क्रमिक पुस्तक के कम विवेचन के कारण निम्न श्रेणी की थी।

- धारवान टी.सी. जी ने (१९८२) महाराष्ट्र की पाँचवीं कक्षा से लेकर नौंवी के स्तर के लिए नियुक्त किये गये क्रमिक पुस्तकों की कार्यवाही के दृष्टिकोण से आलोचनात्मक अध्ययन किया। इस अध्ययन के उद्देश्य निम्नांकित थे -

१. पाठयपुस्तक का भौतिक पक्ष, आशय, भाषा, विवेचन और अभ्यास का मूल्यांकन करना।

२. अभ्यासक्रम और पाठयपुस्तक के संबंध की खोज करना।

३. छात्रों की आकलन क्षमता से क्रमिक पुस्तक की निहीत योग्यता का संशोधन करना।

४. क्रमिक पुस्तकों का प्रयोग करते समय अध्यापक और छात्रों की अनुभूत समस्याओं का अध्ययन करना। इस अध्ययन के लिए साक्षात्कार , प्रश्नावली , लिखित विश्लेषण इन साधनों का उपयोग किया गया। इस संशोधन के निष्कर्ष इस प्रकार है-

उच्च वर्गीय क्रमिक पुस्तकों में कुछ टंकन त्रुटियाँ दिखाई दी, पाँचवी कक्षा के कुछ पाठ बहुत बडे थे, गद्य पाठों को जादा महत्ता दी गयी थी। पाठयपुस्तकों में स्वाध्यायों की संख्या काफी नहीं थी।

- मेहता एस.आय. जी ने भारत की क्रमिक निर्मिती संरचना और प्रक्रियों का तुलनात्मक अध्ययन किया। इस अध्ययन के उद्देश्य निम्नांकित है -

१. विविध क्रमिक पुस्तक निर्मित संस्थाओं से स्वीकृत कार्यपध्दती और संरचना की विविधता का विश्लेषण करना।

२. विविध राज्यों में राष्ट्रीयकृत क्रमिक पुस्तक निर्मिती की सर्वोत्तम पध्दति का शोध लेना। इस अध्ययन के उपरांत ऐसा दिखाई देता है कि भारत के अधिकांश राज्यों ने इंटर श्रेणी तक के पुस्तकों का राष्ट्रीयकरण किया है।

अब तक के अवलोकन के बाद ऐसा प्रतित होता है कि उपर्युक्त अध्ययन पाठयपुस्तक के विविध पक्षों का है। इस अध्ययन के लिए सर्वेक्षण वर्णनात्मक आदि पध्दतियों का उपयोग किया गया है। तथा प्रश्नावली, साक्षात्कार विश्लेषण पत्र आदि साधनों का इस्तेमाल किया गया है।

उपर्युक्त सभी अध्ययन पाठयपुस्तकें निम्नलिखित तत्वों से संबंधित है -

१. ढाँचा और संरचना।

13540
A

२. आशय।

३. छात्रों ने प्राप्त करने के उद्देश्य।

४. पाठयपुस्तक का स्तर।

५. पाठयपुस्तक का अंतरंग और बहिरंग।

६. क्रमिक पुस्तक के निर्मिती की कार्यपध्दती और वितरण।

पाठयपुस्तक के संशोधित अध्ययन का अवलोकन करने के बाद ऐसा प्रतित होता है कि हिंदी पाठयपुस्तक का 'पाठयपुस्तक तंत्रज्ञान' के अनुसार विश्लेषण अभीतक नहीं हुआ है। जो भी कुछ विश्लेषण किया है वह पाठयपुस्तक के तंत्रज्ञान के कुछ घटकों का है। प्रस्तुत संशोधन अभी भी होना बाकी है। प्रस्तुत अध्ययन हिंदी के पाठयपुस्तक से संबंधित होते हुए काफी महत्वपूर्ण है। पाठयपुस्तक तंत्रज्ञान के छः प्रमुख अंगों के आधार पर कक्षा सातवी के हिन्दी पाठयपुस्तक का विश्लेषण किया गया है।

३.३ उपसंहार -

संशोधन से संबंधित अनुसंधान साहित्य का समालोचन शोधार्थी को उपयुक्त बन पडा है। इससे एक बात स्पष्ट हो जाती है कि अभितक पाँचवी कक्षा के हिन्दी पाठयपुस्तक का मुद्रणतंत्रज्ञान और पाठयपुस्तक तंत्रज्ञान और पाठयपुस्तक तंत्रज्ञान के अनुसार परीक्षण नहीं हुआ है। इसी कारण प्रस्तुत संशोधन बुनियादी तौर पर मौलिक बन जायेगा ऐसा मुझे उचित लगता है।

अध्याय चौथा

शोधकार्य पध्दति

४.१ प्रस्तावना।

४.२ शोधकार्य पध्दति।

४.३ शोधकार्य सामग्री स्वरुप।

४.४ शोध सामग्री इकठ्ठा करने के लिए प्रमुख साधन।

४.५ जनसंख्या एवं न्यादर्श चयन।

४.६ सामग्री विश्लेषण एवं अर्थान्वेषण।

४.७ उपसंहार।